विशेष साहित्यकार
डॉ. धर्मवीर भारती

सम्पादिका : डॉ. सविता सिंह

Scanned by CamScanner

विशेष साहित्यकार

डॉ. धर्मवीर भारती

संपादिका
डॉ. सविता सिंह
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
अण्णासाहेब मगर महाविद्यालय
हडपसर, पूना-28

अतुल प्रकाशन
कानपुर-208011

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-80760-56-8

पुस्तक : विशेष साहित्यकार : डॉ. धर्मवीर भारती

संपादिका : डॉ॰ सविता सिंह

प्रकाशक : अतुल प्रकाशन
57 पी, कुंज विहार II
यशोदा नगर, कानपुर-208011
मो. : 0512-2633004

ई-मेल : atulprakashan@gmail.com

संस्करण : प्रथम 2018

मूल्य : रू॰ 400.00 मात्र

शब्द सज्जा : विष्णु ग्रॉफिक्स, कानपुर

मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर

Vishesh Sahityakar : Dr. Dharmveer Bharti

Etd. By : Dr. Savita Singh

Price : Rs. Four Hundred Only

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

1. अंधायुग के बहाने महाभारत — 7 - 11
- रामकिशोर मेहता

2. सांस्कृतिक संक्रांति के कवि : डॉ.धर्मवीर भारती — 12 - 14
- डॉ. सविता सिंह

3. कवि : डॉ. धर्मवीर भारती — 15 - 23
- प्रो. वंदना पावस्कर

4. डॉ. धर्मवीर भारती की काव्य संवेदना — 24 - 29
- डॉ. कैप्ट, बाबासाहेब माने

5. धर्मवीर भारती कृत काव्य-संग्रह : 'ठंडा लोहा' एक विवेचन — 30 - 36
- सतीश मधुकर साळ्वे

6. डॉ. धर्मवीर भारती : कवि रूप — 37 - 40
- प्रा. रोहिणी रामचन्द्र साळ्वे

7. नाटककार : धर्मवीर भारती — 41 - 44
- तायाजी तुकाराम लोंढे

8. धर्मवीर भारती का गद्य साहित्य — 45 - 48
- गणेश ताराचंद खैरे

9. धर्मवीर भारती के काव्य में रागात्मक प्रेम की वैचारिक व्याख्या — 49 - 54
- डॉ. राहुल उठवाल

10. युद्ध विभीषिका का बोध कराती - धर्मवीर भारती कृत 'अंधा युग ' एक श्रेष्ठ गीति नाट्य — 55 - 58
- डॉ. तरन्नुम बानो

Scanned by CamScanner

4

डॉ. धर्मवीर भारती की काव्य संवेदना

– डॉ. कॅप्ट, बाबासाहेब माने

प्रयोगवादी एवं नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, प्रसिद्ध कथाकार, नाटककार, निबन्धकार, एकांकीकार और आलोचक डॉ. धर्मवीर भारती की काव्य संवेदना व्यापक है। वे मूलतः कवि हैं, परन्तु उन्होंने साहित्य की प्रायः सभी विधाओं पर सफलता से लेखनी चलाई है। डॉ. भारती जी उन कवियों की अग्रणी हैं जिन्होंने नयी कविता को अपनी अनुभूत के आत्मीय प्रभाव से सहज ग्राह्य बनाया है। बौद्धिकता एवं दुरूहता इनकी रचनाओं में न के बराबर है। उनकी काव्य संवेदना 'ठंडा लोहा', 'अंधा युग', 'सात गीत वर्ष' 'नदी प्यासी थी', 'पाँच जोड़ी बाँसुरी' आदि काव्य रचनाओं में फली–फूली है। इन रचनओं में व्यक्त संवेदनाएँ विविध पहलुओं को लिए हुए हैं और समकालीन समाज जीवन को सौन्दर्यग्राह्य एवं प्रेमासिक्त बनने के लिए उद्दीप्त करती हैं, साथ ही पौराणिक संदर्भों एवं कथाओं के माध्यम से आधुनिक बोध भी कराती हैं, वहीं आधुनिक जीवन की वास्तविकताओं में मर्यादाहीनता, अनास्था, घुटन, संशय, वैयक्तिता, कुरूपता, क्रोधाग्नि की तिमिलाहट और पराजित मानव का अंतर्द्वन्द्व भी आक्रोश के साथ प्रस्तुत करती है। असल में काव्य मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति का सरल, सहल एवं लोकप्रिय माध्यम है। उसमें मानव जीवन का सुख–दुख, आशा–निराशा, आनन्द उदासी आदि सभी प्रकार की भाव–भावनाएँ समय–समय पर अभिव्यक्त होती रहती हैं। अतः कवि कभी समाज जीवन की अनुभूतियों के द्वारा उन्हें व्यक्त करता है तो कभी स्वयं की अनुभूतियों के द्वारा ही वाणी प्रदान करता है। काव्य और मानवीय संवेदना का अटूट सम्बन्ध है। दोनों को एक–दूसरे से परस्पर अलग नहीं किया जा सकता। संवेदना मन की उपज है। समाज जीवन की पीड़ा को देखकर या उसके विविध विधाओं के माध्यम से समाज के सम्मुख उपस्थित होती है। फलस्वरूप समाज में जागृति उत्पन्न होती है और वह अच्छाई की ओर जाने की कोशिश करने लगता है। अतः डॉ. धर्मवीर भारती एक साहित्यकार होने के नाते अतिसंवेदनशील और भावुक प्रकृति के इंसान हैं। उनकी

Scanned by CamScanner

संवेदना उनके द्वारा रचित विविध साहित्यिक विधाओं में तो प्रकट हुई ही हैं, परन्तु काव्य में उनकी संवेदना अधिक गहराई से व्यंजित हुई है। उनकी काव्य संवेदना में प्रेम एवं सौन्दर्य, नारी की पीड़ा, उसकी क्रोधाग्नि, नीतिशीलता, धर्मपरायणता, हार की लज्जा और आशा आदि कई भाव–भावनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं।

मानवी मन हमेशा से ही सौन्दर्य का कायल रहा है। चाहे वह पुरुष मन हो या नारी मन। दोनों में सौन्दर्य के प्रति निरन्तर आकर्षण रहता है। नर और नारी के परस्पर सौन्दर्य को प्राप्त करने या महसूस करने की होड़–सी लगी रहती है। इसी होड़ में वे एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते रहते हैं। सौन्दर्य और प्रणय दोनों को एकाकार कर देता है। दोनों में काम या प्रणय की आकांक्षाएँ जागृत होती हैं। ये आकांक्षाएँ दोनों को उल्लास और स्फूर्ति देती हैं। उनमें जीने की नई ललक पैदा करती हैं। उनके जीवन में नये–नये परिवर्तन लाती हैं। अतः डॉ. भारती का भावुक एवं संवेदनशील कवि मन इससे अछूता कैसे रह सकता है ? उनके मन में भी प्रणय भाव जागृत हो ही जाता है और वह झंझावत की तरह। यह झंझावत काम भावना से सिक्त है। अतः कवि का मन उसे त्यागता नहीं, बल्कि साहस के साथ स्वीकारता है। वह प्रियतम के फिरोजी ओठों पर जीवन को कुर्बान कर देना चाहता है। उसके रूप पर वह जीवन को बर्बाद कर देना चाहता है। उसे वासना का विष भी अमृत के समान प्रतीत होने लगता है। अतः वह यह कहने के लिए उतावला हो जाता है कि –

"मुझे तो वासना का विष
हमेशा बन गया अमृत
बशर्ते वासना भी हो, तुम्हारे रूप में आबाद।"[1]

उक्त पंक्तियाँ कवि मन में उत्पन्न प्रेम की पवित्रता और व्यापकता को उजागर करती हैं। कवि का संवेदनशील मन काम–भावनाओं को नितांत मानवीय मानता है। वह सेक्स की कुंठा से ग्रसित नहीं है। उसकी मान्यता है कि आज मशीनी युग में प्राचीन मूल्य परिवर्तित हो चुके हैं। पाश्चात्य शिक्षा के सम्पर्क में आने के कारण नारी अपने अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हो गई है। वह समाज में विविध तरह की भूमिकाओं का निर्वहन कर रही है। वह विविध क्षेत्रों में अपने अस्तित्व का परचम लहराने की कामयाब कोशिश कर रही है। अधिकांश क्षेत्रों में वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। परन्तु आज भी वह पुरुष की अपेक्षा अधिक उदार, कोमल, त्यागी, संवेदनशील और सदाशया है। 'कनुप्रिया' की राधा में नारी में उक्त सभी विशेषताएँ स्पष्ट नजर आती हैं। इस काव्य में कवि ने राधा को अपनी सम्पूर्ण मानसिकता प्रदान की है। इसमें राधा मुग्धा, केलिसखी, अभिसारिका और प्रौढ़ा के रूप में द्रष्टव्य है। वह पारम्परिक प्रेमिका के रूप में अवश्य चित्रित है, किन्तु उसका भाव बोध अद्वितीय है।

Scanned by CamScanner

'कनुप्रिया' की राधा कामयुक्त जीवन को समस्त जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू मानती है। प्रणय का एक छोटा–सा पल भी उसे युग के विस्तार से सशक्त महसूस होने लगता है। इसलिए वह कनु से कहती है –

"कौन था वह, जिसने तुम्हारी बाँहों के आवर्त में,
गरिमा से तनकर, समय से ललकारा था।
कौन था वह, जिसकी अलकों में समस्त जगती की गति
बाँधकर पराजित थी।"[2]

डॉ. भारती की काव्य संवेदना उक्त काव्य में राधा–कृष्ण के प्रेम के माध्यम से आधुनिक नारी–पुरुष सम्बन्धों की व्याख्या करती है। राधा–कृष्ण के प्रेमासिक्त कथानक को नया आयाम देकर उसे व्यापक मानवीय सौन्दर्य से जोड़ने का सफल प्रसास करती है। राधा के मन की विरह वेदना, उसकी विवेकशीलता और उसके कोमल हृदय में उठने वाली प्रेम तरंगों को बारीकी से उजागर करती है।

नारी के दूसरे रूप को 'अंधा युग' में अभिव्यक्ति मिली है। इसमें गांधारी के चरित्र के द्वारा आधुनिक नारी की संवेदना को वाणी प्रदान की है। गांधारी अंधी नहीं थी, परन्तु जब उसे यह ज्ञात होता है कि उच्च मूल्यों के नाम पर आदमी दूसरों को धोखा देता है। उसे हानि पहुँचाने की कोशिश करता है तो वह यह स्वार्थी सच देखने की अपेक्षा अपनी आँखों पर पट्टी चढ़ाना स्वीकार करती है। अन्य नारियों की भाँति उसके हृदय में भी अपने पुत्रों के प्रति विशेष लगाव है। उसके भावुक हृदय में श्रीकृष्ण के प्रति भी अपार ममता छिपी है। युद्ध की समाप्ति के बाद वह रणभूमि में अपने पुत्रों के शवों को देखने के लिए पहली बार आँखों से पट्टी उतारती है। यहाँ–वहाँ बिखरे पड़े अपने पुत्रों के शवों को देखने के लिए उसका दिल तड़पने लगता है। पीड़ा एवं तिलमिलाहट की अग्नि में उसका तन–मन जलने लगता है। वह अपने मन पर का नियंत्रण पूरी तरह से खो सकती है। पुत्रों की मृत्यु के शोक में क्रोधित होकर वह श्रीकृष्ण को उसके पक्षपाती व्यवहार के लिए कठोर शाप देती है। यहाँ कवि की संवेदना नारी के क्रोधाग्नि को उसके सही रूप में दर्शाती है। गांधारी शाप देती हुई कहती है –

"सारा तुम्हारा वंश
इसी तरह पागल कुत्तों की तरह
एक दूसरे को परस्पर फाड़ खायेगा
तुम खुद उनका विनाश करके कई वर्षों बाद
किसी घने जंगल में
साधारण व्याध के हाथों मारे जाओगे।"[3]

उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि कवि मन की संवेदनाएँ नारी मन की

Scanned by CamScanner

संवेदनाओं में पूरी तरह से समा चुकी हैं और उनके महीन से पहलू को उजागर करना जानती है। कवि अपने काव्य में केवल नारी मन की परतों को ही नहीं खोलता है, बल्कि पुरुष मन को भी ईमानदारी से पाठकों के सम्मुख खोलकर रखता है। चूँकि कवि जिस काल में अपने मन की संवेदनाएँ जग–जाहिर कर रहा था। वह काल द्वितीय विश्व युद्ध के घातक परिणामों को भलीभाँति देख चुका था। युद्ध के पश्चात् अच्छी–खासी संस्कृति किस तरह से लुप्त प्रायः हो रही थी? इसका अनुभव भी वह ले चुका था। द्वितीय विश्व–युद्ध के बाद पूरी दुनिया में एक विनाशकारी संस्कृति जन्म ले रही थी। जिसमें कुंठा, निराशा, घुटन, संशय, प्रतिशोध और आत्मघाती विकृतियाँ पनपने लगी थीं। आधुनिक जीवन की इन गंभीर एवं विनाशकारी विकृतियों को कवि मन ने भाँप लिया था। परिणामस्वरूप उनके काव्य में इनका सूक्ष्मता से अंकन हुआ है। 'अंधा युग' काव्यकृति इसी की परिणति है। इसमें कवि ने पौराणिक कथा का आधार लेकर युद्ध के घातक परिणामों को सूक्ष्मता से उजागर किया है। अंधेपन में लड़ा गया युद्ध भौतिक विनाश के साथ मानवी विनाश का भी कारण बनता है। परिणामस्वरूप अनेक आस्थाएँ टूट जाती हैं, अनेक व्यक्तित्व विकृत बन जाते हैं। यही नहीं, युद्ध का सबसे घातक परिणाम यह निकलता है कि चहुँ ओर बदले की भावनाएँ आत्मघाती विकृतियाँ जन्म लेने लगती हैं। सच्चाई, ईमानदारी, नैतिकता, परदुःखाकातरता आदि मानवीय मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं रहता। धर्म एवं नीति के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के किसी परिजन की युद्ध में जब हत्या होती है, तब उस व्यक्ति के कोमल ह्रदय को गहरी चोट लग जाती है। उसका ह्रदय प्रतिहिंसा तथा कुंठा का शिकार हो जाता है। जैसे इस काव्य में अश्वत्थामा का हो गया था। जब दुर्योधन का अधर्म एवं अनैतिकता से वध किया जाता है, तब अश्वत्थामा जैसा नीति शील एवं धर्मपरायण व्यक्ति का ह्रदय भी युद्ध का अभिशाप झेल नहीं पाता है। उसके मन में प्रतिहिंसा की भावना जागृत हो जाती है। पर जब उसे यह पता चलता है कि अधर्म का प्रतिकार धर्म से करना संभव नहीं है, तब वह अपने अस्तित्व को ही अत्यंत घिनौना समझने लगता है। कवि ने यहाँ अश्वत्थामा की विवशता को अत्यन्त प्रभावी रूप से व्यक्त किया है। कवि मन की संवेदना अश्वत्थामा में माध्यम से यूँ व्यक्त होती है –

> **"शेष हूँ अभी तक, जैसे रोगी–मुर्दे के,**
> **मुख में शेष रहता है, गंदा कफ, बासी थूक।"**[५]

'पराजित पीढ़ी का गीत' कविता में कवि ने पराजितों की मानसिकताओं को उनके मन की गहराइयों में उतर कर उन्हें नापने की ईमानदार कोशिश की है। हारी हुई पीढ़ी का मन हमेशा निराशा के गर्त में चला जाता है। हार की वजह से उसके दामन में काले दाग लग जाते हैं। उनके चेहरों पर शर्म, लज्जा, ग्लानि

Scanned by CamScanner

जैसे अनेक अपमानजनक भाव स्पष्ट झलकने लगते हैं। सबकी आत्मा में झूठ वास करने लगता है। पराजित होने पर उनके हाथों में टूटे–फूटे हथियारों के सिवाय कुछ नहीं बचता है। कवि ने इस गीत में पराजित पीढ़ी की मानसिकता को अत्यन्त बारीकी के साथ उकेरा है। वे पराजित पीढ़ी का यथार्थ अंकन करते हुए लिखते हैं कि –

"हम सबके दामन में दाग, हम सबकी आत्मा में झूठ,
हम सबके माथे पर शर्म,
हम सबके हाथों में टूटी हुई तलवारों की मूठ।"[५]

'सात गीत वर्ष' काव्य संग्रह में भी धर्मवीर भारती की काव्य संवेदना समाज जीवन के अनेक तरह से प्रेरित एवं प्रभावित करती नजर आती है। इस संग्रह की 'टूटा पहिया' कविता आधुनिक साधनहीन पीढ़ी को जीवन में आगे बढ़ते रहो। साधनहीनता की भावना मन में लाकर यूँ ही हाथ–पर– हाथ धरे बैठने से कुछ हासिल नहीं होता। अतः जो कुछ भी आपके पास उपलब्ध है या बेकार पड़ा हुआ है, उसे बेकार समझकर फेंक नहीं देना चाहिए। क्या जाने कब वह साधन आपको आगे बढ़ने में काम आएगा? यह कह नहीं सकते। अतः ऐसा साधनों को बेकार समझकर नहीं फेंकना चाहिए। चूँकि अभिमन्यु ने भी टूटे हुए पहियों का सहारा लेकर अनेक ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था। इसी संदर्भ देते हुए कवि टूटे हुए पहिए के माध्यम से कहते हैं कि "मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे फेंकों मत। क्या जाने कब इस तरह दुरुह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए। ... तब मैं रथ का टूटा हुआ पहिया उसके हाथों में ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ।"[६]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. धर्मवीर भारती की काव्य संवेदना में भले ही रोमैंटिक भाव बोध हो, परन्तु वह समाज जीवन की वास्तविकता है। सौन्दर्य मानवी जीवन के लिए आकर्षित करने वाला प्रमख साधन है। इसी सौन्दर्य का प्राप्त कर मानव कुछ पल के लिए ही क्यों न हो? जरूर आनंदित हो उठता है। यह आनंद आज की भाग–दौड़ भरी जिंदगी में मनुष्य के लिए आवश्यक है। डॉ. भारती की काव्य संवेदना केकवल कामभावना, सौन्दर्य के प्रति आकर्षण आदि बातों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसमें नर नारी के अलग–अलग मनोभावों का भी सूक्ष्म रूप मिलता है। जहाँ एक ओर उनकी काव्य संवेदना धर्म–अधर्म, नीति–अनीति को उजागर करती है, वहीं पर पौराणिक संदर्भों एवं कथाओं का आधार लेकर युद्ध के दुष्परिणामों से वर्तमान समाज को अवगत भी कराती है, साथ ही समाज जीवन में साधनहीनता के कारण उत्पन्न निराशा को आशा में तब्दील करती है।

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रंथ :

१. आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, डॉ. देसाई, पृ. १५३
२. आधुनिक हिंदी कविता, डॉ. गो. रा. कुलकर्णी, पृ. ६८
३. आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, डॉ. देसाई, पृ. १५४
४. आधुनिक हिंदी कविता, डॉ. गो. रा. कुलकर्णी, पृ. २६४
५. काव्य –परिजात, डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, पृ. १४३
६. काव्य–सरिता, संपादक डॉ. सुरेश साळुंके, पृ. ५५

●

Scanned by CamScanner